सीतादेवी

तिरुमल तिरुपति देवस्थानम्
तिरुपति

श्रीनिवास बालभारती - 99

सीतादेवी

तेलुगु मूल

डॉ. डी. श्रीधरबाबु

अनुवाद

डॉ. के.एस. इन्दिरा

तिरुमल तिरुपति देवस्थानम्
तिरुपति

2013

Srinivasa Bala Bharati - 99
(Children Series)

SITADEVI

Telugu Version
Dr. D. Sridharbabu

Translator
Dr.K.S. Indira

Editor-in-Chief
Prof. Ravva Sri Hari

T.T.D. Religious Publications Series No.954
©All Rights Reserved

First Edition - 2013

Copies :

Price :

Published by
L.V. Subrahmanyam, I.A.S.,
Executive Officer
Tirumala Tirupati Devasthanams
Tirupati.

Printed at
Tirumala Tirupati Devasthanams Press
Tirupati.

दो शब्द

छोटे बच्चों के हृदय निर्मल और शीतल होते हैं। ठीक से पालन पोषण होने पर शिशु आगे बढ़कर भारत के भावी नागरिक बनकर, अच्छी सभ्यता, अच्छे संस्कार के साथ अपने परिवार और देश के लिए भी यश और कीर्ति लाते हैं। अपने पुराणों और इतिहासों में प्राप्त महापुरुष, महा पतिव्रताओं की कथाएँ अगर अपने बच्चों तक पहूँचा सकें तो उनके प्रभाव से नन्हें बच्चों के हृदयों में सुन्दर संस्कार जगा सकते हैं। वे अपने भावी जीवन केलिए प्रयोजनकारी हो सकते हैं।

इसी उद्देश्य से ''श्रीनिवास बालभारती'' नामक पुस्तकमाला को तिरुमल तिरुपति देवस्थान प्रचुरित कर रहा है। अपने भारतदेश के अनेक प्रसिद्ध महात्माओं के इतिहास को लेकर छोटे - छोटे वाक्यों में, सुन्दर कथोपकथन शैली में रचे गये हैं। आशा है, बालक गण इससे लाभ उठायेंगे।

इसी प्रणाली में तेलुगु में रचित पुस्तकों को हिन्दी में अनूदित करवाकर हिन्दी बाल जगत को भी लाभान्वित कराने की इच्छा से तिरुमल तिरुपति देवस्थान ने प्रकाशित हिन्दी में कराने का काम जारी रखा है।

एक योजना बना कर, रचनाएँ लिखवा कर, संपादन कार्य में तल्लीन डॉ.एस.बी. रघुनाथाचार्यजी (संयोजक, ति.ति.दे. प्रकाशक) को मेरी शुभकामनाएँ। इस परिकल्पना में सहायता पहुँचाने वाले रचयिताओं, अनुवादकों, कलाकारों को धन्यवाद।

कार्यकारी अधिकारी
तिरुमल तिरुपति देवस्थानम्, तिरुपति

प्राक्कथन

आज के बच्चे कल के नागरिक हैं। अगर वे बचपन में ही महोन्नत सज्जनों की जीवनियों के बारे में जानकारी लें, तो अपने भावी जीवन को उदात्त धरातल पर उज्ज्वल रूप से जीने के मौके को प्राप्त कर सकते हैं। उन महोन्नत सज्जनों के जीवन में घटित अनुभवों से हमारी भारतीय संस्कृति, जीवन में आचरणीय मूल धार्मिक सिद्धान्तों तथा नैतिक मूल्यों आदि को वे निश्चय ही सीख सकते हैं। आज की पाठशालाओं में इन विषयों को सिखाने की संभावना नहीं है।

उपरोक्त विषयों को ध्यान में रखकर तिरुमल तिरुपति देवस्थान के प्रचुरण विभाग ने डॉ.एस.वी.रघुनाथाचार्य के संपादन में स्थापित ''बाल भारती सीरीस'' के अन्तर्गत विविध लेखकों के द्वारा तेलुगु में रचित ऋषि-मुनियों व महोन्नत सज्जनों की जीवनियों से संबंधित लगभग १०० पुस्तिकाओं का प्रकाशन किया। इनका पाठकों ने समादर किया और इसी प्रोत्साहन से प्रेरित होकर अन्य भाषाओं में भी इन पुस्तिकाओं के प्रकाशन करने का निर्णय लिया गया। प्रारम्भिक तौर पर इनको अंग्रेजी व हिन्दी भाषाओं में प्रकाशित किया जा रहा है। इनके द्वारा बच्चे व जिज्ञासु पाठकों को अवश्य ही लाभ पहुँचेगा।

इन पुस्तिकाओं के प्रकाशन करने का उद्धेश्य यही है कि बच्चे पढें और बडे लोग इनका अध्ययन कर, कहानियों के रूप में इनका वर्णन करें, तद्वारा बच्चों में सृजनात्मक शक्ति को बढा दें। फल स्वरूप बच्चों को अच्छे मार्ग पर चलने की प्रेरणा निश्चय ही बचपन में ही मिलेगी।

आर. श्रीहरि
एडिटर-इन-चीफ
ति.ति.देवस्थानम्।

सुस्वागत!!

श्रीनिवासदयोद्भूता बालानां स्फूर्तिदायिनी।
भारती जयताल्लोके भारतीय गुणोज्ज्वला ॥

खण्डखण्डांतरों में नागरिकता के जागृत होने के पहले ही भारतदेश सभ्यता, संस्कृति के लिए, नैतिक धार्मिकादर्शों के लिए ख्याति पा चुका है। इस भूमि पर जन्म हर मानव ने अधर्म का सामना करते हुए, धर्माचरण से जीवन व्यतीत हुए भगवान तक पहुँचने का प्रयास कर ख्याति पाई है। ऐसे महात्मों के साथ रहना अपने लिए सुखसंपत्ति पाना ही है। उनके जीवन आदर्शो के स्मरण मात्र से अपना जीवन सार्थक हो जाता है। यहाँ का हर बालक और बालिका यही मानते हुए देश सेवा में रत हैं कि 'मैं भारतीय हूँ', 'यह मेरा सांप्रदाय है', 'यह मेरा कर्तव्य है।'

इस पावन देश में अनेकों महापुरुषों, महापतिव्रताओं, महान्वीरों ने जन्म लेकर, अपनी उच्च संस्कृति की नींव डाली है। स्वच्छ जीवनवाहिनी को हम प्रवाहित की है। अहा! हम कितने धन्य हैं। अपना अतीत इतना उदात्त और भव्य है। अगर ऐसे पुण्यपुरुष, महासाध्वी यहाँ जन्म न लेते तो यह भव्य संस्कृति हमें कैसे प्राप्त होती? उनके जीवनानुभवों को समझना, उनके इतिहास का मनन करना, उनके आदर्शों का स्मरण करना, अपने लिए एक उदात्त ज्ञान प्राप्त करना यह विद्याभ्यास ही है। आगे आगे ये जातियाँ जीवन प्रवाह में कुछ सालों तक अपनी स्फूर्ति और प्रेरणा फैलाती ही रहेगीं। इसलिए श्रीनिवास बालभारती का उदय हुआ है। चाहता है कि अनेक महापुरुषों को आपके सामने लायें। अब आप ही की देरी हैं! बच्चो! आइए, आइए।

भरपूर मन से आपका स्वागत है!

एस.बी. रघुनाथाचार्य
प्रधान संपादक

ब्याह होकर अभी अधिक समय बीता ही नहीं, युवराज बननेवाला पति दीर्घकाल के लिए वनवास जानेवाला है। राज्य का अधिकार देवर के हाथों में जानेवाला है। जंगल का वातावरण तो अति भयंकर होता है। सहधर्मचारिणी होने के कारण उसे किस प्रकार का निर्णय लेना है? पति के बिना ससुराल में रहना है? या माइके में जाना है? आज की गृहिणी क्या करेगी हम अंदाजा लगा सकते हैं? पर उसने क्या किया?

'पति के बिना नारी जीवन व्यर्थ है' मानती हुई सब के कहने पर भी अनसुनी करती हुई वह पति के साथ वनवास के लिए चल पडी। 'पति जहाँ हैं। वहीं जगह उनके लिए स्वर्ग' मानते हुए पति के सुख में ही नहीं, उनके दुःख, दर्द में भी साथ रहना है इसी आदर्श के साथ अनेकों यातनाएँ सहती रही। क्या जानते हैं यह आदर्शपत्नी कौन है? यही भारत की लाडली सीता देवी है।

रावण के यहाँ तपती रही, राम तक पहूँची तो दाशरथी ने अग्नि परीक्षा रखी। निश्चल भाव से आग में प्रवेश कर अपने पतिव्रता धर्म की जीत को संसार में फैलाई। माइके और ससुराल के लिए ख्याति लानेवाली यह नारी भारतीय स्त्रियों के लिए आदर्श है। अब आगे पढ़िए।

- प्रधान संपादक

सीतादेवी

हल के तले शिशु

प्रचीनकाल में जनक नामक महाराजा विदेहराज्य की प्रजा का न्याय और धर्म के साथ पालन करता था। मिथिला उस राज्य की राजधानी थी। राजा जनक ने एक बार एक महान यज्ञ करने का निर्णय लिया। यज्ञभूमि को हल के सहारे सुचारु रुप से जोतना एक पुरातन संप्रदाय है। वहाँ हल चलाते समय एक सोने की पेटी उन्हें मिली। जनक ने उसे खोला। उसमे एक शिशु चमचमाती हुई दिखाई दी। तब तक जनक निस्संतान था। उस शिशु को हृदय से लगाया। ऐसा लगा कि अचानक उन्हें वर मिल गया। उनका हृदय आनंद से डोलने लगा। हल जोतते समय मिलने के कारण उस शिशु का नाम 'सीता' रखा। जनक द्वारा लालित पालित होने के कारण 'जानकी', मिथिला की राजकुमारी होने के कारण मैथिली कहलायी।

जनक अन्तःपुर में जाकर उस शिशु को अपनी रानी को सौंपा। उसने बडी आत्मीयता के साथ उस शिशु को हाथ में लिया। बडे वात्सल्य से उसका पालन पोषण किया। इस प्रकार जनक के घर लाड - प्यार से पलनेवाली सीता अति सौंदर्यवती थी। सभी मानते थे कि साक्षात् महालक्ष्मी ही सीता के रुप में अवतरित हुई है।

वंश का सत्यनाश करुँगी

हिन्दु सांप्रदाय में पुनर्जन्म पर विश्वास किया जाता है। अपने पूर्वजन्म में सीता वेदवती थी, उनके पिता कुशध्वज और माँ मालावती थे। वे इस अतिसुन्दरी वेदवती का विवाह विष्णुमूर्ती से

करना चाहते थे। वह भी विष्णु को चाहती थी, सदा उनका ही ध्यान करती रहती थी। पर एक राक्षस वेदवती को पाना चाहता था। कुशध्वज ने न कर दिया तो राक्षस क्रोधी होकर वेदवती के पिता को मार दिया। पति की मृत्यु पर दुःखित मालावती भी मर गयी।

माता पिता को खोकर वेदवती जँगलों में चली गई। विष्णु का ध्यान करती हुई उनकी तपस्या करने लगी। इस प्रकार तपस्या करती हुई वेदवती को लंकाधिपति रावण देखता है। उनकी सुन्दरता पर आवाक् रह जाता है। मोहित होकर, विवाह करना चाहा पर वेदवती इन्कार करती हुई कहती है कि विष्णुमूर्ति के सिवा वह और किसी से शादी नहीं करेगी। रावण क्रोधी होकर तपस्या करती हुई वेदवती को पकडता है। पर पुरुष के हाथ लगने पर वह जीवित रहना नहीं चाहती है। योगाग्नि की सृष्टि कर उसमें जल जाती है। यह प्रतिज्ञा करती हुई आग में जल जाती है कि हे रावण! अगला जन्म लेकर विष्णुमूर्ति से विवाह कर तुम्हारे वंश का मैं समूल नाश करुँगी।''

लंका की हानि

कुछ समय उपरान्त वही वेदवती लंकानगर में एक कमल में जन्म लेती है। उस कमल के अन्दर की शिशु को सर्वप्रथम रावण ही देखता है। ज्योतिषों ने बतलाया कि इस शिशु के जन्म से लंका की हानि संभव है। यह सुनकर रावण उस नवजात शिशु को एक सोने की पेटी में रख समुद्र में बहा देता है। यही पेटी कुछ समय के बाद मिथिलानगर पहूँचती है। यही शिशु यज्ञ के लिए भूमि जोतते

समय हल से लगती है और जनक को दिखाई देती है। यह सीता के पूर्वजन्म की कथा है।

एक परीक्षा

सीता की शोभा दिन - ब - दिन बढ़ने लगी। सयानी हुई तो जनक ने उनके लिए योग्य वर ढूँढ़ना चाहा। अनेक राजा सीता का हाथ माँगने आये। पर जनक को उनकी योग्यता पर विश्वास नहीं था। योग्य वर के चुनाव के लिए एक परीक्षा लेनी चाही। तब उन्हें एक विचार आया। उनके पास शिवधनुष था। वह धनुष तो दादा, परदादा के समय से ही उनके घर में था। उसके पीछे एक कथा है।

क्रोध की शान्ति

एक बार दक्ष ने एक महान यज्ञ आयोजित किया। सभी देवताओं को बुलाया, पर शिव को नहीं बुलाया। तब शिव क्रोध से तिलमिला उठे। एक अनोखी धनुष लेकर शिव ने दक्ष और उनके यज्ञ के लिए पधारे देवताओं पर प्रहार किया। वे लाचार होकर शिव के शरण में गये। तब शिव का क्रोध शान्त हुआ और वह धनुष देवताओं कों सौंप दिया।

सीता स्वयंवर

इसके उपरान्त देवता गण ने उस धनुष को देवरात् नामक राजा को दिया। देवरात और कोई नहीं - निमि चक्रवर्ती का छटा पुत्र - जनक महाराज का पूर्वज था। तबसे लेकर जनक महाराज के समय तक वह धनु उनके वंशजों द्वारा पूजाएँ प्राप्त कर रहा था। वह अतिमहिमा प्राप्त धनुष था। अत्यंत भारी भी था। उसे देवता, राक्षस,

गन्धर्व कोई भी उठा नहीं पाते थे। साधारण व्यक्ति तो उसका संधान नहीं कर सकता था। एक अवतार पुरुष था। महावीर के लिए ही यह संभव था। इसलिए जनक घोषित करता है कि - जो भी व्यक्ति उस धनु को उठाकर संधान करेगा वही सीता के लिए योग्य वर है। माना जाता है कि यही उनकी महानता को मापने की परीक्षा है।

सभी राज्यों में सीता स्वयंवर की घोषणा की गई। शिवधनु का भंग कर अपनी वीरता का प्रदर्शन देने के लिए अनेकानेक राजपुत्र पधारे। पर एक भी उस धनुष को उठा नहीं पाये यहाँ तक कि उसे हिला भी नहीं सके।

इससे अधिक और क्या चाहिए?

कुछ समय व्यतीत हुआ। जनक महाराज एक यज्ञ का संकल्प कर कुछ व्यवस्था करवा रहे थे। उसी समय अयोध्यापति दशरथ के पुत्र रामलक्ष्मण के साथ विश्वामित्र महर्षि मिथिला नगर पहूँचे। विश्वामित्र के आगमन का समाचार पाकर, जनक ने परिवार के साथ गौरव सहित स्वागत किया। विश्वामित्र ने रामलक्ष्मण का जनक के साथ परिचय कराया। उनकी प्रभा और प्रताप का विवरण दिया। उनके यज्ञ की रक्षा के उपलक्ष्य में राम के द्वारा 'ताटकी' नामक राक्षसी का वध, शिला के रुप में पडी हुई अहल्या का शापविमोचन आदि बातें बतायी। जनक की खुशी की सीमा ही न रही। लगा कि जानकी की कल्याण घडी आ चुकी है। एक आशा की रेखा जनक के मन में कौंध गयी। विश्वामित्र जानता था कि शिवधनु को उठानेवाला वीर, प्रतापी राम ही होगा। सीता और राम के कल्याण का समय आ पहूँचा है। इसलिए संदर्भोचित बातें जनक से

यूँ बतायीं - 'हे! राजन! आप के पास स्थित शिवधनुष को ये दोनों राजकुमार देखने के लिए आतुर हैं। कृपया उसे मँगवाइए।'' ये बातें जनक को अच्छी लगीं। आनंद के साथ उत्तर दिया - ''हे! महर्षी! इससे बढ़कर और क्या चाहिए? अवश्य मँगवाऊँगा। अगर धनुष का संधान राम के द्वारा हो तो मैं सीता के साथ उनका ब्याह रचूँगा। इस वार्ता से सीता भी प्रसन्न हुई। उन्हें ऐसा लगा मानो उनके लिए कोई एक नये संसार के द्वार खोले गये हो।

धनुर्भंग

जनक की आज्ञा के अनुसार पाँच हजार सेवक, आठ पहियो वाली गाडी पर लोहे की पेटी के ऊपर रखी शिवधनुष को लाये। जनक ने विश्वामित्र की ओर देखते हुए कहा - आप के राजकुमार प्रयत्न कर सकते हैं।'' विश्वामित्र ने श्रीरामचन्द्र को इशारा किया। राम ने बडी आसानी से शिवधनुष ऊपर उठाई और उस पर डोरी

(प्रत्यंचा) लगाई। आखिर वह धनुष राम के हाथ में दो टुकडे हुआ। ऐसा लगा बिजली गिरी हो। सभी आनंद और आश्चर्य में डूब गये। इस पराक्रम प्रदर्शन से राम, कल्याण राम बना।

मधुरानुभूति

शिवधनुर्भंग से सीता पुलकित हुई। उनमें गतजन्म की स्मृतियाँ जाग उठी। नयी नयी अनुभूतियाँ होने लगीं। ऐसी भावना जागृत हुई कि विष्णुभगवान ही राम के रुप में अवतरित हुए हैं। यूँ एक बार श्रीराम की ओर देखकर आँखें झुकीं भी।

अयोध्या को समाचार भेजा गया। दशरथ सपरिवार मिथिला पधारे। उन्हें समुचित भवनों में रहने का स्थान दिया गया। जनक की पुत्री सीता का राम से, ऊर्मिला का लक्ष्मण से, भरत और शत्रुघ्न का जनक के भाई कुशध्वज की पुत्रियों, माण्डवी और श्रुतकीर्ति, से विवाह का निर्णय लिया गया।

सीता वधू बनी

जनक की यज्ञशाला के बीच कल्याण मंडप सजाया गया। अग्नि को साक्षी बनाकर शादियों के लिए अग्नि कुण्ड तैयार किया गया। जनक की पुत्री जानकी इस उत्सव के लिए सर्वाभरण धारण कर सर्वांगसुन्दरी बनी। श्रीराम के आगे जानकी को खडा कर जनक ने मंत्रपूत जल से कन्यादान करते हुए कहा - ''यह मेरी पुत्री सीता है, तुम्हारी सहधर्मचारिणी बननेवाली है, उसका हाथ संभालों। यह पतिव्रता समान तुम्हारी छाया बनकर सदा तुम्हारे साथ रहें''। सभी ने मंगलाशीष दिये। चारों विवाह संपन्न हुए। कुलगुरु वशिष्ठ के

आदेश के अनुसार पहले अग्नि की, फिर महर्षिगण की परिक्रमा दम्पतियों ने की। विवाह की प्रथा समाप्त हुई।

जन्म सार्थक

मिथिला से सभी अयोध्या केलिए चल पडे। पूरे मार्ग पर इत्रजल, मंगल ध्वनि, वेदों का पठन आदि की व्यवस्था की गयी। कुलगुरु वशिष्ठ, दशरथ महाराज, सीता और राम, परिवार के अन्य सदस्य सब अयोध्या पहुँचे। मार्ग पर भवनों पर खडी जनता ने उनका स्वागत आनंदोत्साह और धूमधाम से किया। राजधानी में अतिथि सत्कार हुआ, राजसौध के द्वार पर कौसल्या, सुमित्रा, कैकेई अपने पुत्र और पुत्रवधुओं का स्वागत कर आत्मीयता पूर्वक अन्दर ले गयीं। रीति रिवाज के अनुसार उत्सव मनाया गया। नागरिक आनंद परवशता में डूबे रहे। सभी अयोध्यावासी सीताराम को देखने राजधानी पहुँचे। साक्षात लक्ष्मीनारायण समान भासित नयी दम्पति को देखते हुए अयोध्यावासी अपना जीवन धन्य मानने लगे। सीताराम अयोध्या में बड़ों की सेवा करते हुए, दाम्पत्यजीवन बिताते आनन्द से रहे।

अयोध्या - ससुराल

राम सकल गुणाभिराम हैं। आप मृदु मधुर स्वभावी हैं। उनसे अन्याय सहा नहीं जाएगा। आप वचन बध्द हैं। क्षमा आपका सहज लक्षण है। आप शरणागत रक्षक और करुणा से ओतप्रोत महानुभाव हैं। इनकी नियति है- एक वचन, एक बाण और एक पत्नी। ऐसे महान राम के लिए सीता योग्य गृहणी है। एक पल के लिए वे एक दूसरे को छोडकर नहीं रह सकते थे। उनके प्रेम और अनुराग,

उनका दाम्पत्य जीवन लोगों के लिए आदर्शप्राय है। सीता सुगुणवती है। बडों का आदर सत्कार करना उनका गुण है। उनकी विनयसंपत्ति देखकर उनकी सासें और ससुर अत्यंत प्रभावित थे। राम के वचन तो उनके भाइयों के शिरोधार्य हैं। लक्ष्मण के लिए तो बडे भाई सर्वस्व हैं। अपनी भाभी पर तो श्रध्दा, भक्ति रखते हैं। दशरथ के लिए राम जीवनाधार ही थे। उनकी आशा, आकांक्षाओं के राम केंद्रबिन्दु थे। इस प्रकार सीताराम ने सभी सुखों को भोगते हुए अयोध्या में बारह वर्ष संतोष पूर्वक बिताये।

राजतिलक का समाचार

एक ऐसी घटना घटी कि सीताराम की इस सुखयात्रा में रुकावट आयी। श्रीराम एक महाराज के पुत्र, सीता एक महाराज की पुत्री - उनको जीवन में अनेक कष्ठ उठाने पडे। इसका बीजारोपण इस घटना से हुआ। कारण यह है कि दशरथ महाराज ने सोचा कि राम का राजतिलक हो। सिंहासन पर बिठाया जाय। उन्होंने सोचा - बुढ़ापा है, रामभद्र को जिम्मेदारियाँ सौंप कर अपनी बोझ उतार दें। राम को युवराज की पद पर बिठाने का संकल्प किया गया। राज दरबार में इस संकल्प की घोषणा की गई। सभा में उपस्थित बडे बुजुर्गों की हर्षध्वनि दरबार में गूँज उठी। युवराज अगले दिन पट्टाभिषिक्त होनेवाले थे।

अयोध्या में आनंदोत्साह

राम का जन्म नक्षत्र पुनर्वसू है। उनके लिए पुष्यमि संपत्तारा है। इस गणना के साथ शुभ मुहूर्त का निर्णय किया गया। सभी के मन में आनंद की लहरें दौड रही थीं। सीता के आनंद की सीमा ही नहीं।

अपने जीवन सारथी राम का पट्टाभिषेक, अपना भी आधा हिस्सा है। दशरथ ने बताया कि पट्टाभिषेक की पहली रात्री के समय सीताराम को उपवास दीक्षा रखनी है और पूजापाठ में बिताना है। उसी के अनुसार व्रत रखा गया। अयोध्या की हर जगह पर उत्सव धूमधाम से प्रारंभ हुआ। मण्डप बनाये गये, इमारतों पर झण्डे पहराये गये। लोग गाना गा रहे थे। जनता आनंदेत्साह में डूबी थी।

मंथरा का मंत्रांग

एसे आनंदपूर्ण वातावरण में अयोध्या पर विषाद के मेघ मंडराने लगे। राजधानी में कल्पनातीत परिणाम उत्पन्न हुआ। राम के इस पट्टाभिषेक को रोकने का षडयंत्त रचा जाने लगा। यह षड्यंत्र कुटिल मंथरा के दिमाग में पैदा हुआ। दशरथ की लाडली रानी कैकेई का इस में प्रधान योगदान है। मंथरा कैकेई की दासी है। वह कुब्जा है, रुप के अनुसार उसकी बुद्धि भी है। बातें बनाने में, षड्यंत्र रचने में, वह अद्वितीय है। राम के युवराज बनने की बात सुनकर उसमें ईर्ष्या जाग उठी। क्रोध से तिलमिला गयी। तुरंत कैकेई के पास दौड पडी। राम के युवराज बनने की बात सुनकर कैकेई प्रसन्न थी। वह अपने गले का हार निकाल कर मंथरा को पहनाती हुई बोली - ''क्या? मेरे राम का पट्टाभिषेक है? कितना शुभ समाचार ले आयी है मंथरा, ले यह तुम्हारे लिए इनाम!'' मंथरा ने उसे निकालकर फेंक दिया। कैकेई के लिए तो राम अत्यंत प्रीतिपात्र थे, उस पर वह विष की धुआँ फूँकने लगी। भरत को सुदूर नाना के घर भेजकर इस प्रकार राम का पट्टाभिषेक एक व्यूह ही है। स्वभाव से भोलीभाली कैकेई के सिर में यह विष फैल गया। कैकेई को लगा कि दशरथ,

कौसल्या और राम उनके शत्रु हैं। भरत को सिंहासन पर बिठाने का मार्ग बताने का आग्रह वह मंथरा से करने लगी।

कैकेई के वरदान

एक युध्द के सिलसिले में दशरथ को कैकेई ने सहायता पहूँचाई थी, इस पर प्रसन्न होकर दशरथ ने दो वर देना चाहा। मंथरा अब उस बात की याद दिलाती हुई बोली कि उन वरों को अब माँगलो। कैकेई एक वर के रूप में भरत का पट्टाभिषेक, दूसरे वर के रूप में राम के लिए चौदह साल का वनवास माँगा। इन कठोर बातों को सुनकर दशरथ को बडी वेदना हुई। दुःखी होकर कैकेई की निन्दा करते हुए रात भर वहीं रहें, इतने में प्रातःकाल हुआ।

धर्म की परीक्षा

राम को सिंहासन पर बिठाने का मुहूर्त निकलनेवाला ही था। दशरथ के मंत्री सुमंत उत्सव सम्बन्धी व्यवस्था का विवरण देने के लिए दशरथ के शयनमंदिर में गया। कैकेई के वर और दशरथ की व्यथा से वह अपरिचित था। दशरथ बोल ही नहीं सके, इतने में कैकेई ने ही बताया कि राम को बुलाया जाय। राम को समाचार मिला। राम, लक्ष्मण के साथ आये। वे सीधे पिता के पास गये, दशरथ पलंग पर सुस्त पडे थे। केवल ''राम'' ही कह सके। राम समझ नहीं पाये कि दशरथ नाराज हैं या अस्वस्थ्य। कैकेई ने स्वयं बताया - राम को वनवास जाना पडेगा और भरत का पट्टाभिषेक होगा। राम ने वादा किया कि पिताजी की आज्ञा के अनुसार वे वनवास के लिए जाएंगे। सीधे कौसल्या के पास पहूँचा तो विषय जानकर वह तो मूर्च्छित हुई। लक्ष्मण आग बबूला हो उठा। राम ने

सब को शान्त करते हुए बताया कि यह क्रोधी होने का अवसर नहीं है। यह तो धर्म की अग्निपरीक्षा है।

मैं आगे चलूँगी

राजधानी के परिणाम सीता नहीं जानती थी। अपनी पूजा आदि समाप्त कर राम की प्रतीक्षा कर रही थी। शोक में डूबी माँ से विदा लेकर राम अपनी पत्नी सीता के पास गये। राम को राजमर्यादा के साथ आना चाहिए था, पर इस प्रकार अकेले आते देखकर सीता चकित हुई। उन्हें लगा कि राम के चेहरे पर कान्ति की कमी है। राम ने सीता के पास पहूँचकर धीमी आवाज़ से सभी बातें बतायीं। अन्त में राम ने कहा - ''सीते! चौदह साल तक वल्कल पहनकर वनवास के लिए दण्डकारण्य जा रहा हूँ। तुम्हें बताने आया हूँ। हमारे लिए अब भरत प्रभु हैं। उनके प्रति सजग रहो। सास, ससुर की श्रध्दापूर्वक सेवा करो।''

राम की बातों से सीता अत्यंत चिन्तित हुई। उन्होंने जवाब दिया कि - ''हे नाथ! माता, पिता, भाई - बहन, बहू - बेटे ये सभी अपने अपने पापपुण्य खुद भोगते हैं। पर सिर्फ पत्नी ही पति के सुख - दुःख में, पापपुण्य में हिस्सा बाँटती है, यही धर्म है। क्या ये सभी आप नहीं जानते? मेरी परीक्षा क्यों लेना चाहते हैं? आपको वनवास जाने की आज्ञा मिली तो समझिए कि वह आज्ञा मेरे लिए भी है। आप जंगलों में चलते रहें तो मैं आप के आगे आगे चलती रहूँगी। आप के साथ वन में रहती हुई वहीं पर अपने माइके का आनंद पाऊँगी। आप के सहचर्य का भाग्य न हो तो अयोध्या ही नहीं, स्वर्ग में भी नहीं रह सकूँगी।''

क्या यह धर्म है?

सीता की बातें सुनने पर राम ने सीता को डराते हुए कहा - ''जंगलों में रहना अत्यंत कठिन और वहाँ भयानक जंगली जानवर होते हैं''। पर सीता मानने तैयार न थी। समझाया कि वल्कल धारण कर, जटाएँ धारण कर ऋषि पत्नी समान रहना, कंदमूल खाते हुए दिन बिताना मामूली बात नहीं। अन्त में सीता नाराज होकर बोली- ''हे! रघुवंशी! मेरे पिता जनक तुम्हें महावीर मानते हुए तुम्हारे साथ मेरा विवाह कर गलती कर बैठे हैं। तुम्हारा असली रुप अब जान पडा है। संसार मानने लगा कि तुम सूर्य समान तेजस्वी हो, मैं पति की सेवा करना चाहती हूँ आप मुझे छोडकर जाना चाहते हैं। अब कहना ही क्या है? मुझे औरों के पास छोडकर जाना क्या धर्म है? अपनी यौवनावास्था में पतिव्रता पत्नी को दूसरों के पास रखकर जाना क्या उचित है? मैं आप के साथ अवश्य चलूँगी अन्यथा अपने प्राण त्याग दूँगी''।

इन बातों से राम का हृदय पिगलने लगा। आँसू भर आयें। ''हे! सीते! तुम्हारी रक्षा कर नहीं पाऊँगा, ऐसा भय मुझे कभी नही हैं। तुम्हारे मन की बात भी जानना है न! चलो, मेरे साथ वनवास की तैयारियाँ आरंभ कर दो। तुम्हारे आभूषण, धनधान्य ब्राह्मणों और याचकों को दान में दे दो।'' तब लक्ष्मण भी वहीं उपस्थित था। उनकी बातें सुन रहा था। उसे भी जंगल ले जाने की विनती की। रामने उसे मना करना चाहा पर लक्ष्मण बार बार प्रार्थना करता रहा तो अपने साथ ले जाने के लिए राजी हुआ।

वल्कल की साडी से...

सीता, राम, लक्ष्मण ने अपनी सारी चीजें सभी में बाँट दी, शस्त्र धारण कर राम और लक्ष्मण, उनके पीछे पीछे सीता राजमार्ग पर पैदल निकले। सारी प्रजा रोती रही, उनकी आँखों में आँसू थे। मन दुःखित हुआ, राम सीता और लक्ष्मण सहित राजा दशरथ के यहाँ पहूँचा, उनके लिए आवश्यक वल्कल कैकेई ने स्वयं अपने हाथों से दिया। इससे कैकेई का षड्यंत्र पूरा हुआ। राम, सीता और लक्ष्मण का वे कपडे देते हुए एक जोडा आपने भी पहना। सीता नहीं जानती थी कि उन्हें कैसे पहना जाय? राम के समीप आकर शर्म से सिर झुकाकर खडी रही। तब राम ने उनकी साडी पर ही उस साडी को बाँध दिया।

क्या तार के बिना वीणा बजती है?

दशरथ की आज्ञा के अनुसार बलिष्ठ घोडे से जुथा रथ सिंहद्वार के पास तैयार था। सास कौसल्या, सीता को बाहों में भरती हुई बोली - बहू! कठिनाइयों में पति का अनुसरण करती हुई, उन्हें सुख पहूँचाना स्त्री का धर्म है, उसी का अनुसरण करो।'' तब सीता ने, उचित समाधान देते हुए कहा- ''सासूमाँ! पति, पत्नी के धर्म मैं बचपन से ही पिता जनक के घर से ही सीख चुकी हूँ, पति की सेवासुश्रूषा मैं अवश्य करूँगी। चाँदनी जिस प्रकार चाँद से ही जुडी रहती है उसी प्रकार मैं सदा उनके साथ रहूँगी। उनके बिना मेरा अस्तित्व नही है। क्या तारों के बिना वीणा बजती है? क्या बिना पहिये के रथ चलती है?''

अरण्यवास का आरंभ

सभी रथ के समीप आये। सीता के लिए आवश्यक वस्त्र, आभूषण, राम लक्ष्मण के लिए अस्त्र शस्त्र, कवच रथ पर तैयार हैं। पहले सीता रथ पर चढ़ी, बाद में राम, लक्ष्मण और सुमन्त रथ पर आरुढ़ हुए। रथ चल रहा है। घोडे केलगाम ढ़ीले कर दिये गये। राम की आज्ञा के अनुसार सुमंत ने रथ को तेज चलाया। वह दौडते हुए सीमा पार गई। सभी शून्यदृष्टि से देखते रह गये। राम को आखरी बार देखने की लालसा से आगे आते हुए राजा दशरथ मूर्च्छित हुए।

सीता, राम और लक्ष्मण युक्त रथ, तमसा नदी के किनारे पहूँचा। रात वही आराम करना चाहा। सीताराम और लक्ष्मण के लिए सुमन्त ने शय्या बिछायी। रथ के साथ आई अयोध्या की प्रजा आराम कर रही थी। आधीरात बीत गयी। राम ने उठकर सुमन्त से कहा - प्रजा हमें छोडना नहीं चाहती है, नींद में रहती हुई प्रजा को छोडकर हम नदी पार जाऐंगे।'' रथ तैयार कर रातों रात नदी पार गये। इस प्रकार कोसल राज्य की सीमाएँ पार कर चले गये।

गुह ने गंगा का पार करवाया

गंगानदी के किनारे से रथ चल रहा है। राम उस नदी के तीर पर विश्राम करना चाहते थे। उस प्रदेश के अधिपति गुह ने सीता और राम का स्वागत सत्कार किया। रात बीतती गई, पूर्व की दिशा में सूरज की कान्ति फैलने लगी। गंगा को पार करने के प्रबन्ध किये गये। गुह ने क्षणभर में सुसज्जित नाव मँगवाया। राम ने पत्नी और भाई सहित नाव पर चढ़ते हुए सुमन्त को आयोध्या वापस भिजवा

दिया। गुह की आज्ञा के अनुसार नाव खेनेवाले नाव चलाने लगे। नदी के जलों को छीरता हुआ नाव नदी के मध्य पहूँचने पर सीता भक्तिभाव के साथ हाथ जोडती हुई गंगा की प्रार्थना करने लगी - ''हे! गंगा माई! चौदह वर्ष के वनवास की पूर्ति पर वापसी में अपने पति और भाई सहित यहीं तुम्हारी पूजा करुँगी''। नाव किनारे पर पहूँचा।

चित्र - विचित्र चित्रकूट

अरण्यवास का आरंभ हुआ। आगे लक्ष्मण, पीछे सीता उनके पीछे राम - वे वन में प्रवेश कर रहे थे। यात्रा करते करते गंगा, यमुना, सरस्वती नदियों के संगम स्थान प्रयाग पहूँचे। सूर्यास्त तक भारद्वाज मुनि के आश्रम पहूँचे। तीनों ने उस महर्षि से अतिथ्य, आशीर्वाद स्वीकार किया। राम ने उनसे पूछा कि कहाँ पर पर्णकुटि बनायें? कहाँ उचित होगा? उन्होंने सूचना दी कि दस कोस की दूरी पर चित्रकूट नामक स्थान है वह निवासयोग्य रहेगा। पत्ते और शाखाओं से लदे छोटी सी नैया पर बैठकर उन्होंने यमुना नदी पार की। यमुना से भी सीता प्रार्थना करती है कि सकुशल वापस लौरने पर पूजाएँ करुँगी। दक्षिण तीर पर पहूँचकर एक बडे वटवृक्ष की छाया में पहूँचे। उस वृक्ष की वन्दना कर आशीर्वाद चाही। राम ने अपने भाई लक्ष्मण से कहा - ''देखो! तुम्हारी भाभी के लिए यहाँ सबकुछ अद्‌भुत ही लग रहा है। वह जो चाहेगी, हमें तुरंत देते हुए उनके मन को ठेस नहीं पहूँचानी है।'' वहाँ उपलब्ध विलक्षण फल, फूल, लताओं वृक्षों को दिखाते हुए राम ने सीता को उनका विरण दिया।

पर्णशाला में प्रवेश

चित्रकूट पहूँचने पर वहाँ की प्रकृतिशोभा निरखकर सीता उत्साह से भर उठी। चित्रकूट में वाल्मीकी ऋषि से भेंट की। उन्होंने ही पर्णकुटि बनाने का उचित स्थान बताया। माल्यावती नदी के तीर पर राम और लक्ष्मण ने सुन्दर पर्णकुटि का निर्माण किया। विधि विधान से पूजाएँ, वास्तु होम आदि कर कुटि में प्रवेश किया।

चित्रकूट से अत्रि आश्रम

चित्रकूट की पर्णकुटि में सीता के लिए सभी सुविधाएँ प्राप्त थी। सामने कल कल बहनेवाली नदी, पक्षियों के चित्र विचित्र गान, हर जगह प्रकृति की हरियाली से सीता अत्यंत प्रसन्न थी। पर कुछ समय से राक्षसों के अत्याचार की बात फैलने पर ऋषि, मुनि उस जगह को छोडने लगे। राम को भी वहाँ रहने की इच्छा नहीं हुई। अंत में वे चित्रकूट छोडकर अत्रि महर्षि के आश्रम पहूँचे।

ये फूल मुरझाऐंगे नहीं, ये वस्त्र मलिन होंगे नहीं

अनसूया अत्रि महामुनि की पत्नी है। उनके साहचर्य में सीता अत्यंत प्रसन्न रहती थी। सफेद पके बालों से, गुथियो से भरे शरीर से अनसूया रहती थी। उनके अनुभवी व्यक्तित्व से प्रभावित सीता ने उनका चरण स्पर्श कर आशीर्वाद लिया। वात्सल्य के साथ उस तपस्वी वृद्धा ने कहा ''धर्मबुद्धि के साथ जीवो, हे सीता! तुम तो सभी सुखों को, सभी बन्धुजनों को छोडकर इस वन में रहती हुई अपने पति की सहधर्मचारिणि बनी हो! पति से बढ़कर बन्धु, उनकी सेवा से बढ़कर तपस्या नहीं है, इस धर्ममार्ग को न छोडती हुई शाश्वत

ख्याति पाओ।'' तब सीता ने सुन्दर वचनों में जवाब देते हुए कहा - ''माँ! अनुसूया! पति अगर अधर्मी हो तो भी उनका साथ स्त्री को नहीं छोडना है, पर मेरे पति तो सर्वगुण संपन्न हैं, माता और पिता समान मेरी रक्षा करते हुए छाया समान मेरे साथ हैं - ऐसे जीवन ज्योति राम का साथ छोडना मेरे लिए असंभव है।''

तब कभी न मुरझा जाने वाली फूल मालाएँ, वस्त्राभरण, सुवासित लेपन आदि सीता को उन्होंने दिये। आगे उन्होंने बताया कि ''ये फूल कभी नहीं मुरझाऐंगे, ये वस्त्र कभी मैले नहीं होगे, इन के साथ अपने पति के आगे तुम साक्षात शची देवी समान लगोगी।'' सीता के विवाह सम्बन्धी समाचार सुनकर प्रसन्न हुई। इस दिव्य दम्पति से विदा लेकर सीता राम लक्ष्मण आगे बढ़े।

मेरे पति को छोडो, मुझे मारो

सीताराम ने दण्डकारण्य में कदम रखे। रामचन्द्र को पत्नी और भाई सहित आने की खबर पाकर महर्षिगण ने मंगलवाक्यों से उनका स्वागत किया। पैर धोने के लिए पानी, खाने के लिए मधुर फल, पीने के लिए पानी आदि का प्रबन्ध कर अतिथि सत्कार किया। उस रात को वहीं आराम कर सुबह फिर निकले।

भयानक जंगल था। सिंह की गर्जना, रीछ की आवाजें - भयंकर वातावरण था। सीता भयभीत थी। इतने में विराध नामक भयंकर आकृतिवाला राक्षस उन्हें देखकर चिल्लाने लगा। एकदम लाँघकर सीता को पकड लिया। राम और लक्ष्मण को देखकर चीखते हुए कहा - कौन हैं आप? मरना चाहते हैं क्या? क्यों ऐसे प्रान्त में आयें। जानते हो मैं कौन हूँ? रोज ऋषियों का माँस खाता हूँ, इस सुन्दरी

को मैं अपनी पत्नी बनाऊँगा, आप को मारकर आपका खून पी जाऊँगा। हा... हा... हा...'' सीता उसके हाथों में तडप रही थी। राम की आँखों में क्रोध की ज्वालाएँ फूट पडी। सात बाण छोडते हुए कहा - ''हे दुष्ट! तुम्हे मौत बुला रही है, इसीलिए तो सीता को पकडे हो'' बाण सीधे उसके शरीर को लगे। वह अभी जीवित था। गुस्से में आकर सीता को छोडते हुए राम और लक्ष्मण को हाथों में गेंद समान पकडकर जंगल में दौडने लगा। सीता डर गयी। 'ये राक्षस! मेरे पति को छोड दो, चाहे मुझे मार दो।'' कहती हुई सीता रोने लगी। अपने प्राण न्योछावर कर पति की रक्षा करना चाहती थी। सीता अपना धर्म मानती है। अन्त में राम और लक्ष्मण ने विराध को मारकर, एक खाई खोदकर उसमें डालदिया। भय से विचलित सीता को राम आलिंगन कर सांत्वना देने लगे।

सीता के प्रति सावधान रहो

इसके उपरान्त उन्होंने अनेको आश्रमों को देखा, अनेकों महर्षियों की सेवा की। अन्त में अगस्त्य महर्षि के आश्रम पहूँचे। अगस्त्य से वज्रखचित सोने का धनुष, विश्वकर्म द्वारा निर्मित तूणीर, रजत तलवार पुरस्कार रुप में पायें। शस्त्र तो राक्षस संहार के लिए आवश्यक ही है।

वनवास में राम के साथ रहकर कष्ट सहनेवाली सीतादेवी की प्रशंसा करते हुए अगस्त्य ने सलाह दी ''हे! रामभद्र! दाशरथी! तुम पर उनका जो प्रेम है उसी के कारण इस वन में भी क्लेश उठाने तुम्हारे साथ आयी हैं। साधारणतया स्त्रियाँ अपने पति की सुखसंपदा भोगना चाहती हैं, पर जानकी देवी विलक्षण है। तुम्हें अपना सर्वस्व

मानती है। सीता के मन को लेश मात्र भी कष्ट न हो, ऐसे जागरुक हो तुम्हें रहना है।''

पंचवटी में पर्णकुटि

अगस्त्य महामुनि की बातें सीता को अत्यंत मधुर लगीं। उन्हें तृप्ति मिली कि इस लोक में मेरे आदर्शों को समझनेवाले भी हैं। अगस्त्य ने सूचना दी कि अपने आश्रम से दो योजन की दूरी पर पंचवटी में पर्णकुटि बनाकर रहें। वह सीता के लिए भी सुविधाजनक होगी। यह सुनकर गोदावरीनदी के समीप पहूँचे। वहाँ लक्ष्मण ने पर्णकुटि का निर्माण किया। पवित्र जल, फूल आदि से पूजा कर सीता और राम को उस पर्णकुटि में स्वागत किया।

शूर्पणखा

पंचवटी का समय शान्तिपूर्ण रहा। ऐसे प्रशान्त वातावरण में फिर बाधा पडी। एक दिन एक भीकराकृति शूर्पणखा नामक एक राक्षसी पर्णकुटि के पास आई। अति सौन्दर्य से भासित राम पर उस राक्षसी की दृष्टि पडी। अपना परिचय देते हुए राक्षसी ने बताया कि वह रावण की बहन है। राम के बगल में सुन्दरी पत्नी सीता के होते हुए भी उस राक्षसी ने राम पर नजर दौडाई। कहने लगी - ''हे राम! जिस क्षण मैं ने तुम्हें देखा उसी क्षण से तुम पर प्यार हो गया है। सीता को छोड दो, मुझे स्वीकारो। सीता और लक्ष्मण को मैं निगल जाऊँगी। उनकी बाधा न रहेगी। हम स्वेच्छा के साथ शादी कर इस वन में विचरेंगे।'' तब राम ने हँसते हुए कहा - ''वह देखो मेरा भाई वहाँ अकेला है, है अति सुन्दर और उसकी पत्नी भी यहाँ

नहीं है, तुम्हें सपत्नी की पीडा भी नहीं होगी। उसे स्वीकारो। जाओ।'' सीता इस वार्तालाप को चकित होकर सुनती रही। राम का इस प्रकार कहना कुछ अजीब सा लगा। अभी अभी वह राक्षसों के कृत्य, उनके दुर्व्यवहार, उनकी क्रूरता समझने लगी है।

शूर्पणखा लक्ष्मण के पास गई। लक्ष्मण उससे व्यंग्य किया वह राक्षसी कुछ समझ नहीं सकी। अपनी इच्छा पूर्ति में सीता बाधक है इसलिए वह सीता को निगलना चाह रही थी। सीता देवी एकदम डर गयी। यह देखकर राम ने लक्ष्मण को संकेत किया वह आवश्यक कदम उठाये। बस, लक्ष्मण चुरी से शूर्पणखा की नाक और कान काट देता है।

खरदूषण की मृत्यु

शूर्पणखा दर्द से चीखती, चिल्लाती हुई। अपने भाई खर के पास जाकर दुखडा सुनाई। खर क्रोधित हुआ। अपनी सेनाएँ भेजी। राम ने उनका वध किया। अन्त में खर ने अपने भाई दूषण के साथ राक्षस सेना लेकर राम पर हमला किया। भीषण युध्द हुआ। राम ने विष्णुधनुष धारण कर खर के रथ को चूर चूर कर दिया। इन्द्रास्त्र प्रयोग कर उनकी छाती को छीर दिया। पूरी राक्षस सेना को राम बाण ने यमपुरी भेज दिया। हजारों राक्षसों को मारते हुए अपने शौर्य और प्रताप का प्रदर्शन करनेवाले असुर संहारी राम का आलिंगन कर जानकी ने अपनी प्रसन्नता व्यक्त की। वह स्वयं अपनी आँखों से देख रही थी कि अपना पति कितना वीर और शूर हैं। वह जाननेलगी कि राक्षसी कृत्य कैसे होते हैं? विराधने सीता से शादी करना चाहा, शूर्पणखा ने राम से विवाह करने की इच्छा प्रकट की,

इस प्रकार वे अधर्मी बातें कर रहे थे। सीता और राम को उसी अधर्म से संघर्ष करना पडा।

सीतापहरण से राम की स्थिति

खरदूषणों की मृत्यु के समाचार को, रावण का दूत अकम्प ने लंका तक फैलाया। राम और लक्ष्मण के शौर्यपराक्रम का भी समाचार रावण को दिया। रावण साँप के समान फुफकारते हुए, कह बैठा कि उन दोनों का संहार वह अभी कर देगा। पर अकंपन ने उसे रोकते हुए सलाह दी कि राम पर विजय पाना असंभव है, इसलिए सीता का अपहरण कर राम को हानि पहूँचाओ। 'सीता का अपहरण हो तो राम जीवित नहीं रह सकता है, विरह से तुरन्त मरजाएगा।' इसलिए यही मार्ग ठीक रहेगा।

सीता के बिना जीवन व्यर्थ

ये बातें रावण को अच्छी लगी। तुरन्त मारीच के पास गया। प्रार्थना की कि सीता को चुराने में मदद करें। पर मारीच ने मना करते हुए बताया कि सीता को उठा लाना सभी अनर्थों का कारण बनेगा। तब रावण मौन रह गया। पर शूर्पणखा लंका पहूँचकर अपने अपमानित होने की बात बताई और कहने लगी कि राम से वह प्रेम कर रही है। पर राम के व्यवहार से वह नाराज है। इन बातों से उसने अपने भाई के मन में सीता के प्रति मोह जगाया। सीता के अपरुप सौन्दर्य का वर्णन करने लगी। बताई - सीता की आँखें गोल गोल, चन्द्रमा समान मुख, सुन्दर जघन, उत्तुंग स्तन उनके आभूषण हैं। स्वर्णिम आभा से चमकता शरीर है उनका। लम्बी नाक, लम्बे

बाल ऐसी सुन्दरांगी को नहीं पायेंगे तो तुम्हारा जन्म व्यर्थ है। और आगे सीता पर कामनाएँ जगाती हुई शूर्पणखाने कहा - ''जंगल में विचरनेवाले राम के लिए सीता उपयुक्त नहीं बन सकती है, तुम जैसे सुख संपदा में डूबे व्यक्ति के लिए ही वह उचित है।

सीता का अपहरण कैसा हो?

पहले अकंपन ने रावण के मन में सीतापहरण की वांछा जगायी। उस में शूर्पणखा ने घी डालते हुए उसे और जलाई। एक ओर मारीच की कही अच्छी बातें मन में है, दूसरी ओर सीता को पाने की इच्छा मन को तपा रही है। निर्णय ले लिया कि वह सीता का अपहरण कर के ही रहेगा। मदद के लिए मायावी मारीच के पास पहूँचा। यह कार्य मायोपाय से भी संभव है। रावण ने एक उपाय बताया, उसके अनुसार मारीच एक सोने के हिरण का रुप धारण कर पर्णकुटि के पास घूम फिरेगा। उसके सौन्दर्य पर मुग्ध सीता राम से विनती करेगी कि वह उसे चाहिए। तब राम उसका पीछा करेगा। राम को बहूत दूर तक ले जाकर राम की आवाज से ही चिल्लाएगा - ''हा! सीता! हा! लक्ष्मणा!'' तब राम को विपत्ति में फँसा जानकर सीता लक्ष्मण को भेजेगी। इस प्रकार अकेली हो जानेवाली सीता का वह अपहरण करेगा, यही रावण की योजना है।

मारीच ने हितभरी अनेक बातें बताई और कहा - ''तुम्हारी योजना विनाशकारी है''। ये सब रावण के लिए अच्छे नहीं लगे। रावण ने सोचा अब मेरे उपाय को ही लागू करना है। मारीच मायाहिरण बनकर पर्णकुटि के आंगन में फिरने लगा। मणियुक्त सींग, लाल कमल समान मुख, इन्द्रनीलमणि के प्रकाश से चमकते

कान, मरकत मणि कान्तियुक्त खुरें, इन्द्रधनुषी रंगों से भरी पूँछ, स्वर्णिम आभायुक्त शरीर, उस शरीर पर चाँदी के समान चमकते सफेद दाग - अद्वितीय रुप धारण किया मारीच ने। वह खेलते कूदते सीता की दृष्टि को आकर्षित करने लगा।

फूल तोडने सीता आश्रम के बाहर आयी। इतने वर्षों में कभी न सुने और न देखे मृग को देखकर रामलक्ष्मण को बुलाकर बताने लगी। उसे चाहने लगी। लाकर देने का आग्रह करने लगी। लक्ष्मण को कुछ शक हुआ, पहचान लिया और कहने लगा कि यह मारीच की माया ही है। सीता उन बातों को मानने तैयार नहीं थी। आपत्ति के आते समय भली बाते कहाँ अच्छी लगती हैं?

उस समय नारी चंचलता में सीता डूबी रही। राम ने चाहा कि सीता की कामना पूरी करें। हिरण के पीछे दौडने लगा। क्रोध से बाण छोडा। मारीच अपना हिरण रुप छोडकर अपने राक्षस रुप में अपनी योजना के अनुसार ''हा! सीता! हा! लक्ष्मणा!'' चिल्लाते पृथ्वी पर गिर पडा।

इस में कुछ धोखा है

सीता पुकार सुनकर राम की रक्षा के लिए लक्ष्मण को भेजना चाहती है। लक्ष्मण समझाता है - ''यह राक्षस माया है, इसमें अवश्य कुछ कपट छिपा है।'' बहुत देर तक लक्ष्मण नहीं गया तो सीता समझती है कि वह मुझे चाहता होगा, इसीलिए देरी लगा रहा है। लक्ष्मण की निन्दा करने लगी, पर लक्ष्मण के लिए सीता 'माँ' के समान है। उससे ये बातें सहा नहीं गयीं और आवाज की तरफ निकल पडा।

रावण ने सीतापहरण किया

लक्ष्मण के जाते ही रावण एक कपट सन्यासी का रुप धारण कर पर्णकुटि के पास आता है। सीता अतिथि सत्कार में जुटी रही। रावण असली रुप में प्रकट होता है, अपनी मोहभरी बातें सुनाता है। सीता रावण की निन्दा करती रही। पर रावण ने अनसुनी कर दिया। दस मुख, बीस हाथ, उन हाथों में भयंकर शस्त्र, रावण के इस भयानक रूप को देखकर सीता भय के थर थर काँपने लगी। चीखने, चिल्लाने लगी। रावण ने सीता को पकड लिया। एकदम रथ पर बिठाकर आकाश मार्ग में उड़ा। गोदावरी नदी से, प्रस्त्रवण पर्वत से प्रार्थना करने लगी कि राम को खबर पहूँचा दो कि रावण मुझे उठा ले जा रहा है। उस समय एक महान वृक्ष पर सोता हुआ जटायु पक्षी को बुलाकर रोती हुई कहती है - ''राम को बतादो कि रावण मेरा अपहरण कर चुका है।''

घायल जटायु

जटायु उठा, रावण के रथ को रोकने लगा। अपनी वीरता का प्रदर्शन किया। राक्षस राजा ने उस जटायु के पंख, पैर काट डाले। वह पक्षी राजा राम को यह समाचार देने के लिए अन्तिम सांसे लेते हुए पडा रहा। सीता भी जटायु की स्थिति पर अत्यंत दुःखित हुई।

रावण सीता को लेकर आकाश मार्ग से आगे बढ़ा। सीता जोरो से रोने लगी। सीता को ऊपर से देखने पर पाँच वानर दिखायी दिये। सोचा, अगर राम मेरे लिए ढूँढ़ने यहाँ पहूँचे तो मेरा पता बता सकते हैं। इसी विचार से अपने आभूषण निकाल कर आँचल में

बाँधकर उन वानरों के बीच डाल दिये। तेजी से जाते समय रावण ने इसे नहीं देखा। शीघ्र गति से पंपानदी और दक्षिण समुद्र पार करते हुए लंका पहूँचा।

घासपूस के समान

लंका पहूँचते ही रावण ने सीता को अन्तःपुर में रखा। दासियों को आज्ञा दी कि इसकी सेवा करो। अपने रहस्यमंदिर में जाकर दण्डकारण्य में रामलक्ष्मण क्या करेंगे, सीता के लिए कहाँ कहाँ ढूँढ़ेगें, यह समाचार तुरन्त देने के लिए कुछ दूतों की नियुक्ति की। वापस अंतःपुर में पहूँचा तो देखा सीता शोकसमुद्र में डूबी है। रावण उसे खुश करने के लिए अपनी संपदा, पुष्पक विमान आदि दिखाये। परपुरुष का वैभव सीता पर कोई प्रभाव डाल नहीं सका।

अपने शौर्यप्रताप का वर्णन स्वयं करते हुए रावण ने कहा ''सीते! राम साधारण पुरुष है।'' अपनी विशाल राज्य का सविवरण वर्णन किया। अपने से विवाह कर लंकाराज्य की पट्टमनिषी बनने का प्रलोभन दिया। सीता का हृदय तो राम के लिए ही समर्पित है। वहाँ औरों के लिए कोई जगह नहीं। रावण और अपने बीच एक घास के तिनके को रखती हुई सीता ने जवाब दिया - ''हे! धूर्त्त! तुम कितनी भी मिन्नतें करो, मैं तुम्हारे वश में नहीं आऊँगी। धर्मप्रभु राम की पत्नी हूँ। मुझे तुम कभी पा नहीं सकोगे। श्रीराम की बाणाग्नि में तुम जल कर राख बन जाओगे। चाहे मुझे टुकडे टुकडे भी बना डालो, मेरा मन परिवर्तित नहीं होगा। यह मन रामभद्र के अधीन में रहता है, यह और किसी को कभी नहीं चाहेगा।''

एक वर्ष की अवधि

ये बातें कामार्त रावण को अच्छी नहीं लगी। रावण ने डराते हुए सीता से कहा - ''जानकी! तुम्हारी मंदबुध्दि पर दया आती है। अभी एक और साल की अवधि दूँगा। इतने में मनः परिवर्तन हुआ तो महारानी बनोगी, नहीं तो मेरे रसाई में तुम्हें मारकर, पकाकर मुझे सुबह के नाश्ते के रुप में परोसेंगे।'' रावण ने आदेश दिया कि सीता को अशोक वन में बंदी बना दे।

वानर सेना द्वारा सीतान्वेषण

मारीच वध के बाद राम, लक्ष्मण पर्णकुटि पहूँचे। वहाँ क्या है? शून्य, सीता नहीं है। राम का हृदय विरह के कारण तिलमिला गया। सीतान्वेषण प्रारंभ हुआ। मार्ग में जटायू दिखायी पडा। 'रावण ने सीता का अपहरण किया' - ये जटायू के अन्तिम वाक्य थे। समाचार पहूँचाकर प्राण छोड दिया। ढूँढ़ते ढूँढ़ते ऋष्यमूक पर्वत के पास पहूँचे।

वहाँ सुग्रीव नामक वानर राजा है। उनका मंत्री हनुमान अत्यंत बलवान था। उसने दूत बनकर रामलक्ष्मण और सुग्रीव के बीच अग्नि को साक्षी बनाकर मैत्री करवाया। उसी मैत्री के कारण राम ने सुग्रीव के भाई वाली का संहार किया। सुग्रीव किष्किन्धा का राजा बना। मित्रता के समझौते के अनुसार सीता को ढूँढ़ने के लिए चारों दिशाओं में अपनी वानर सेना को भेजा। एक महीने के अंदर सभी को वापस किष्किन्धा पहूँचने का आदेश दिया।

सुग्रीव ने सोचा कि रावण सीता को दक्षिण दिशा की ओर ले गया है, इसलिए सीता का पता उस तरफ मिल सकता है। इसलिए

वालि के बेटे युवराज अंगद के नेतृत्व में नील, हनुमान, जांबवंत आदि महान वीरों की मण्डली को तैयार किया। विशेषरुप से हनुमान से कहा कि यह काम तुम से ही संभव है।

राम को भी विश्वास हुआ कि महान् बुध्दिमान, बलवान हनुमान से ही यह कार्य हो सकता है। अपना नाम खचित अंगूठी को दिया। हनुमान ने उसे श्रद्धा पूर्वक लिया। अंगद सहित हनुमान और अन्य वीर दक्षिण दिशा की ओर चल पडे। मार्ग में वन, गुहाएँ, गिरि, पर्वत सब ढूँढ़ते रहे, कहीं सीता का पता नहीं चला।

सीता लंका में है

उन्हें जटायू का भाई संपाति नामक पक्षिराज दिखाई पडे। उसने बताया कि ''राम! राम!'' कहती रोती हुई एक स्त्री को रावण लंका की ओर ले जा रहा था, मैं ने देखा है। आप ही सीता होगी। संपाति की दृष्टि दीर्घ दृष्टि थी, बहुत दूर तक वह नजर दौडा सकता था। उसने दक्षिण की ओर दृष्टि रखते हुए देखा कि समुद्र के उस पार, सीता बंदी है। वहाँ का विवरण देते हुए संपाति ने कहा सीता राक्षसी स्त्रियों के बीच है। इस विवरण से वानरों में उत्साह पैदा हुआ। वे दक्षिण समुद्र तट की ओर निकल पडे।

हनुमान लंका पहूँचा

सीता का पता मिला है। उन्हें अपनी आँखों से देखे बिना किष्किंधा वापस नहीं जाना है। यह सुग्रीव की आज्ञा है। सीता को देखना है तो लंका पहुँचना है। लंका पहुँचना है तो समुद्र लाँघना है। यह तय हुआ कि अंगद की सेना में कोई भी समुद्र पार नहीं कर

सकता। अंगद जा सकता है पर वह युवराज और सबका नायक है, इसलिए नहीं जाना है। अब बचा है केवल महा शक्ति संपन्न हनुमान ही।

अंजनादेवी को वायुभगवान की कृपा से हनुमान पैदा हुआ है। वह सौ योजनों के दूर समुद्र लाँघने तैयार हुआ। दक्षिण दिशा पर दृष्टि रखकर सभी देवताओं को प्रणाम किया। मेघ के समान गर्जना की। भुजाएँ फैलाते हुए, जाँघ मारते हुए अपनी पूँछ ऊपर उठाई। एकदम दक्षिण समुद्र के तट पर स्थित महेन्द्र पर्वत के शिखर से उडने लगा।

वायुपुत्र हनुमान आकाश मंडल में अत्यंत अद्‌भुत ढ़ंग से तैर रहा है। त्रिकूट पर्वत पर स्थित लंका नगरी पहूँचा।

अशोकवन में जानकी

लंकानगरी पहुँचकर हनुमान ने सोचा कि लंकानगर के बारे में जानना कठिन है। सीता से ऐसा मिलना है कि रावण को पता नहीं चले। लंका पहुँचते पहुँचते मध्याह्न हो गया। रात तक सोचता रहा। रात्री के समय लंका नगर में प्रवेश करने गया। सर्वप्रथम वहाँ पहरा देनेवाली लंकिणी ने हनुमान को रोका। उसे अपने बाहिने हाथ से एक घूँस लगायी। नारी होने के कारण नहीं मारा। वही रास्ता देने लगी। प्राकार पर चढ़कर अंदर कूद पडा।

शत्रुनाश चाहते हुए लंकानगरी में बायाँ पैर रखते हुए प्रवेश किया। सारा प्रान्त देख आया। जो भी स्त्री दिखाई दी, सावधानी से परखने लगा कि सीता तो नहीं? हनुमान ने इससे पहले सीता को

देखा नहीं था। कल्पना कर चुका कि श्रीराम की पत्नी सीता साक्षात् महालक्ष्मी समान होगी। हो सकता है श्रीराम के विरह में आहार, निद्रा छोडकर कुछ दुबली हो गयी होगी। सभी भवनों पर कूदता रहा। अन्त में राजमंदिर में पहुँचा। वहाँ अनेकों सुन्दरी नारियाँ दिखाई दीं। रावण की पट्टमहिषी मंडोदरी को देखकर सोचा कि वे सीता होगी। इसका कारण है पतिव्रता मंडोदरी में कुछ शुभ लक्षण दिखाई दे रहे थे। भ्रम में पडा था हनुमान। इतने में देखा कि राम के वियोग में तप्त सीता सुखपूर्वक हंस तूलिया शय्या पर कैसे सो सकती है? इस शंका मात्र से उसकी भ्रांति दूर होगयी।

इतने में हनुमान अन्तःपुर से बाहर देखने लगा तो एक सुन्दर बगीचा दिखाई दिया। वही अशोक वन है जहाँ सीता बन्दी है। चारों तरफ प्राकार है। उडते हुए अंदर पहूँचा। कुछ शुभ शकुन दिखाई दिये जिससे सोचा कि सीता यहीं अवश्य होगी। वहाँ पर एक शिंशुपावृक्ष है। उसी पर हनुमान बैठा रहा।

उस वन में श्वेत हजार स्तंभों का एक भवन दिखाई दिया। वह एक विहार मंडप है। उसके अन्दर से सीता बाहर आयी। चारों तरफ राक्षसी स्त्रियाँ हैं। सीता मलिन साडी पहनी हुई है। उस दिन वानरों को आभूषणों की एक गठरी मिली, उस कपडे का रंग और आज पहनी हुई साडी का रंग एक ही था। हनुमान को विश्वास होने लगा कि यही सीता है। ऐसे सोचते सोचते प्रातःकाल हो गया।

सीता का हितोपदेश

रावण अपने परिवार के साथ अशोक वन में आया। वह कामुक हो प्रेमवाक्य बकने लगा। सीता ने पहले जैसे ही एक घास का तिनका

- अपने और रावण के बीच रखा। ऐसे करने में सीता का उद्देश्य यह हो सकता है कि हे! रावण! तुम मेरे लिए तिनके के समान हो।

सीता ने रावण को चेतावनी दी - ''शरणागतवत्सल राम के शरण में जाओ, नहीं तो तुम्हारा सर्वनाश अनिवार्य है''। सीता का तिरस्कार रावण से सहा नहीं गया। उसने जानकी से कहा - ''देख सीते! मेरी बातें तुम सुन नही रही हो। मैं ने तुम्हें एक साल की अवधि दी है, उसमें अभी दो महीने बाकी हैं, अवधि के अन्दर मन का परिवर्तन कर लो, नहीं तो समय पूरा होने पर तुम्हें मार दूँगा।'' राक्षस स्त्रियों की ओर गुस्से से देखते हुए अन्तःपुर में चला गया। जाते जाते राक्षसी नारियों को आज्ञा दी कि अनुनय विनय से सीता को समझाओ। वे सब सीता को घेर कर रावण सम्बन्धी बातें बताने लगी।

त्रिजटा का दुस्वप्न

यह सब हनुमान वृक्ष पर बैठकर देख ही रहा था। सीता दुःख में डूबी है। हनुमान भी व्यथित हुआ कि श्रीराम पत्नी को इतने सारे कष्ट क्यों? राक्षस स्त्रियाँ सीता को मारना चाहती थीं, इतने में त्रिजटा नामक राक्षसी दौड आई और अपने बुरे सपने के बारे में बोलने लगी। उस स्वप्न में उसे ऐसे दुःशकुन दिखलाये कि रावण की हानि होनेवाली है। उसने कहा - मेरे सपने में मैं ने एक वानर को देखा, जो लंका में प्रवेश कर लंका जला रहा है।

लंका में रामकथा

त्रिजटा का यह स्वप्न वृत्तांत सुनकर राक्षस स्त्रियाँ भयभीत हुईं। सीता को सताये बिना दूर जाकर सो गयी। सीता ऊब गयी।

सोचने लगी - दो महीने बाद कैसे भी रावण मार ही देगा। आत्महत्या कर इससे पहले मुझे खुद मरना है। जिस पेड पर हनुमान बैठा था उसी पेड की शाखाओं पर अपने बालों को बाँधकर गले में बाँध कर फाँसी पर लटकना चाहा। ऐसे प्राण त्याग करने के बारे सोच ही रही थी जानकी को कुछ शुभ शकुन दिखाई दिये। उसकी बाई आँख, भुजा और जाँघ फडकने लगे। सीता ने आत्महत्या प्रयत्न छोड दिया। यह सब हनुमान देख रहा था। अगर एकाएक वह सीता तो दिखाई दे तो कुछ विपत्ति हो सकती है। उसे भी राक्षस मानकर वह चिल्लायेगी। इसलिए पेड पर ही बैठकर रामकथा को मृदु - मधुर ढ़ंग से गाने लगा। राम नाम और उनका गुणगान सुनकर सीता का मन शान्त हुआ। रावण की लंका में रामकथा कीर्तन कैसा संभव है। आश्चर्य चकित होकर ऊपर देखी तो एक छोटा सा बन्दर दिखाई दिया।

शुभ समाचार

सीता की नजर मारुति पर पडते ही वह फूले न समाया। कूद कर नीचे आया। सीता के सामने खडे होकर, हाथ जोडकर प्रणाम किया। जानने पर भी पूछा ''माता, आप कौन है?'' सीता ने जवाब दिया ''मैं रामचन्द्र की पत्नी हूँ''। तब हनुमान ने बताया - ''श्रीराम ने मुझे दूत के रुप में भेजा है, कुशल हाल पूछकर आने के लिए कहा है।'' जानकी संतोष में डूबती हुई बोली - ''वत्स! कितना अच्छा शुभ समाचार लाये हो?'', इतने में फिर शंका हुई कि यह राक्षस माया तो नहीं।

सीता दृढ़ता के साथ पूछने लगी - ''सत्य बोलो! हे वानर! तुम कौन हो?'' हनुमान को लगा सीता मुझ पर शंका कर रही है, इसलिए अपने साथ लाई श्रीराम की अंगूठी को सीता को दिया। उस अंगूठी को देखते ही सीता की आँखों में आनंद की ज्योति जगमगाने लगी। राम किस प्रकार 'सीता! सीता!' कहते हुए दुःखित हैं हनुमान ने बताया। सीता भी विरहतप्त राम को याद कर दुःखित हुई। बोली - हे आंजनेय। अब रावण की रखी अवधि सिर्फ दो महीने की है, उसके बाद वह मुझे मार देगा।''

तब आंजनेय ने धैर्य बंधाते हुए कहा - ''हे माँ! मैं तुरन्त जाकर रामभद्र को तुम्हारा कुशल समाचार दूँगा। वे वानर सेना सहित लंका आयेंगे। धीरज धरो।'' और यह भी कहा कि अगर सीता चाहती है तो उन्हें वह अपने कंधों पर बिठाकर राम के पास ले जाएगा। सीता को संदेह हुआ। कि इतना छोटा सा वानर क्या उसमें उतनी शक्ति हो सकती है? हनुमान ने चाहा कि अपनी शक्ति सामर्थ्य सीता को बतादे। इसलिए अपना देह बढ़ाया, पलभर में आकाश को छूनेवाले पर्वताकार धारण किया।

चूडामणि - एक निशान

तब सीता ने कहा - वत्स! तुम्हारी शक्ति का अंदाजा हो गया है। साधारण रुप धारण करलो। सीता, हनुमान की भुजाओं पर बैठकर जाना नहीं चाहती। तिरस्कृत करते हुए सीता ने कहा - यह तो रामचन्द्र के शौर्य प्रताप के लिए कलंक है। इस मे छिपे धर्मसूक्ष्म को हनुमान ने ग्रहण किया। रामभद्र को बताने के लिए कुछ निशानी चाही। सीता ने मारुती को सीता राम के बीच एकान्त में घटी कुछ

घटनाओं और राम के साथ घूमने के स्थानों के बारे में कहा। फिर अपने आँचल में छिपाई चूडामणि दी और कहा कि यह मेरी निशानी के रुप में रखो। हनुमान उसे लेकर सीतादेवी की परिक्रमा कर साष्टांग प्रणाम किया। पुत्र समान हनुमान को सीता ने आशीर्वाद दिया और विदा किया।

देखने गया जलाकर आया

हनुमान को तुरन्त लंका छोडने की इच्छा नहीं हुई। अशोक वन की उत्तरी प्रहरी पर जाकर बैठ गया। अपने देह को पर्वत समान बढ़ाया। फिर समुद्र लाँघना होगा। सोचा - सीतादेवी को इतनी यातनाएँ देनेवाले राक्षसों में हलचल मचाना है, एक बार रावण को भी देखकर सीख सिखाना ही है। अपने इस संकल्प की नींव मन में डालते हुए हनुमान आशोकवन का नाश करने लगा। पेड उखाँड कर, शाखाएँ तोड डालीं।

रावण तक समाचार पहूँचा। अपने सेवक को भेजकर उस बंदर को पकडने की आज्ञा दी। मारुति ने उन सब का वध किया। अनेक वीर कुमार आयें, रावण का छोटा बेटा अक्षय कुमार भी आया। हनुमान ने सबको यमपुरी भिजा दी। रावण ने अपने पुत्र इन्द्रजित को बुलाकर, ब्रह्मास्त्र का प्रयोग कर उस वानर को बाँधकर लाने की आज्ञा दी। रावण पुत्र इन्द्रजित ने ब्रह्मास्त्र का प्रयोग किया, उसे स्वीकारते हुए हनुमान ने अपने आप को बन्दी करवाया।

राक्षस ने हनुमान को रावण के पास लाये। सभा में हनुमान ने राम की वीरता की प्रशंसा की। घोषणा की कि परस्त्री को चाहनेवालों

के लिए उचित प्रायश्चित्त होगा। मोहमाया में पडकर पापकार्य करने वालों का सर्वनाश हो जाएगा। हनुमान डराने लगा कि मेरा राम शीघ्र ही लंका पहुँचकर, लंकाधीश का सर्वनाश करेगा। रावण इन बातों से नाराज होकर आज्ञा दी ''मुँह जोर इस बन्दर को मार दो'', पर उनके भाई विभीषण ने सलाह दी कि 'दूत का वध नहीं करना है'। तब सजा दी गयी कि पूँछ जलाकर वहाँ से भगा दो।

यह समाचार राक्षस नारियों के द्वारा सीता तक पहुँचा। वह अग्निदेव से प्रार्थना करने लगी कि मेरी सहायता करनेवाले इस हनुमान की हानि न करें। पूँछ पर कपडे बाँधकर तेल डालकर आग लगा दी गई, एकदम वे कपडे जलने लगे। आश्चर्य है, मारुति को गरमी का अनुभव ही नहीं हो रहा है, यह सीता की प्रार्थना की शक्ति ही है। कुछ देर राक्षसों द्वारा दी गयी यातना सहता रहा, फिर एकदम अपने बंधनों को तोडकर लंका के भवनों और इमारतों को जलाने लगा।

सीतामाई का दर्शन

मारुति ने अपनी पूँछ को समुद्र में डुबोकर आग बुझाई। अन्तिम बार सीता के दर्शन कर उनके आशीर्वाद पाकर त्रिकूटाद्रि पर खडे होकर आकाश में उडने लगा। समुद्र पार कर महेन्द्रगिरि पर उतरे। हनुमान को देखकर अन्य वानर आनंद से कूदने लगे। सब मिलकर राम के पास गये। हनुमान ने राम के आगे घुटनों के बल बैठकर कहा - ''मैं सीतामाई का दर्शन कर आया हूँ। वे जीवित हैं''। फिर लंका में बीती सभी बातों का सविस्तार बताया।

किष्किन्धा में युध्द की तैयारी आरंभ हुई। लम्बी वानर सेना, राम और लक्ष्मण के साथ, सुग्रीव, हनुमान के संग दक्षिण समुद्र पर पुल बाँधकर लंका पहूँची।

युध्द आरंभ हुआ। राक्षस योध्दा एक एक कर युध्द में मारे जाने लगे। इन्द्रजित हार गया, रावण का भाई कुंभकर्ण नहीं रहा। उसके भाई विभीषण ने राम की शरण ली। अपने लोगो के रहस्यों को राम के पास पहूँचाता रहा। अन्त में रावण समरभूमि में आया। राम - रावण युध्द भयंकर रुप से चला। राम बाण ने रावण के हृदय को छीर दिया। विभीषण को राम ने लंका राज के सिंहासन पर बिठाया गया।

सीता को देखना है

राम ने हनुमान से कहा - ''हे! मारुति! तुम राजा विभीषण से आज्ञा लेकर, सीता के पास जाकर उनके कुशल समाचार लाओ।'' हनुमान ने आशोकवन पहुँचकर सीता से बात की। सीता ने हनुमान से कहा - ''वत्स! मैं श्रीरामचन्द्र को अभी देखना चाहती हूँ। यह बात मेरे स्वामी से कहो।'' हनुमान ने इन बातों को राम तक पहूँचाया। राम ने विभीषण से कहा कि जानकी को दिव्य वस्त्रों से सुसज्जित कर यहाँ लायें तो उचित होगा। राम की आज्ञा के अनुसार विभीषण सीता को रत्नो से जडी पाल्की पर बिठाकर लाया। वानर सेना में सीता के दर्शन की आतुरता बढ़ गयी। सेवकों के रोकने के कारण हलचल मच गयी।

यह देखकर राम ने कहा - ''हे! विभीषण! किसी को रोको नहीं। सब को सीता का दर्शन करने दो। स्त्रियों के लिए सदा शील

और व्यवहार नामक दो परदे हमेशा लगे रहते हैं। विपत्ति के समय, युध्द के समय, स्वयंवर और शुभकार्यों में स्त्री को सभी देख सकते हैं। अब तो सीता महान् यातनाओं से गुजरकर बाहर आयी हैं, हे विभीषण! उनसे कहो कि वह पाल्की से उतर कर आयें। सीता, राम के पास पहूँची। राम ने सीता को सम्बोधित करते हुए कहा - सीते! रावण ने जो अपमान किया उसका मैं ने प्रतीकार कर दिया है। ये मत सोचो कि यह सब मैं ने तुम्हारे खातिर ही किया है, मेरे वंश की प्रतिष्ठा के लिए भी किया है। तुम्हारे चरित्र पर विश्वास करने की स्थिति में मैं अब नहीं हूँ। पर पुरुष में घर में इतने समय तक, एक कामांध के गोद पर बैठी तुम्हें अगर मैं स्वीकारुँगा तो सोचो मेरा वंश गौरव का क्या होगा? लोग क्या सोचेंगे? अब तुम जो भी करना चाहती हो करो, जहाँ जाना चाहती हो वहाँ जा सकती हो।

तभी प्राण छोडती थी

राम के पास पहुँचते समय सीता ने सोचा कि मेरी यातनाएँ अब दूर हो गई है। पर राम की बातें सुनकर वह सहम गई। हाथी अपने सूंड से मारने पर लता की जो स्थिति होगी वही स्थिति अब सीता की रही। राम के कठोर वचन शूलों के समान सीता के हृदय को चुभने लगे। अंत में धीरज धारण कर सीता ने राम से कहा-

सौमित्रि! चिति की व्यवस्था करो

''हे महावीर! मैं ने सोचा कष्टों में डूबी मुझे तुम्हारे पास सांत्वना मिलेगी। पर तुम्हारे वचन व्यथाजनक हैं। तुम लोकनिन्दा की बातें कर रहे हो। एक समस्या को खडा कर दिया कि रावण ने

मेरा स्पर्श किया है। चाहे मेरे शरीर को रावण ने छुआ हो पर हृदय तुम्हारे लिए ही समर्पित है। मेरा हृदय तुम्हारी ही आराधना कर रहा है। तुम्हारे तिरस्कार से अब मेरे लिए क्या रास्ता रह गया है? यहाँ कैसा धर्म है? मेरी परीक्षा ले रहे हो। जब आप ने हनुमान के साथ संदेश भेजा अगर उसी समय अपकी भावना बतायीं हो तो तभी मैं प्राण त्याग देती। इस युध्द की या इन सबकी आवश्यकता ही न होती। फिर भी इस आखरी परीक्षा में मैं अवश्य विजयी रहूँगी।'' लक्ष्मण की ओर देखती हुई कहने लगी - ''सौमित्री! इस स्थिति को पारने के लिए अब एक ही उपाय है। चिति की तैयारी करो। मैं चिति में प्रवेश करूँगी। मुझसे यह निन्दा सही नहीं जाती है।''

सीता की जीत

लक्ष्मण ने राम की ओर देखा। आँखों से ही आज्ञा पायी। चिति जलाई गयी। अग्नि की ज्वालाएँ उठने लगीं। सीतादेवी ने राम की परिक्रमा की। ''मेरा मन अगर राम का हो, मन की ही मेरी वाणी, अगर मनोवाक्काय कर्म से मैं राम की हूँ तो यह अग्नि मुझे नहीं जलायेगी।'' कहती हुई ज्वालओं में कूद पडी। सभी आवाक् देखते रह गये, कोई कुछ कह ही नहीं पाये।

यह एक महान् परीक्षा है। इसे राम ने रखी है। दुःखों और संकटो की यह पराकाष्ठा है। फिर भी जानकी को अग्नि कुछ कर नहीं पायी। अग्नि ने स्वंय आकर सीता के पतिव्रता धर्म और उनकी निर्मलता का वर्णन राम के सामने करने लगा।

तब राम ने कहा - हे! अग्निदेवता! मुझे भी पता है कि सीता निष्कलंक है, सब जानते हुए भी लोक विश्वास के लिए इस प्रकार

मैं व्यवहार कर रहा था। इतनी कठोर परीक्षा ले रहा था। सीता की ही जीत हुई है। सीता तो 'पातिव्रत्य ज्वाला स्वरुपिणी' है, इस पतिव्रता की तीनों लोकों में ख्याति होगी। अग्नि परीक्षा में जीतने के बाद सीता राम के समीप गयी। सीता और राम के मिलन पर लोग आनंदित हुए। देवताओं ने पुष्पवृष्टि की।

राम के साथ राज्याभिषेक

विभीषण द्वारा दिये गये पुष्पक विमान पर राम ने सीता को हाथ पकडकर चढ़ाया। राम, सीता और लक्ष्मण विमान पर चढ़े। सभी पुष्पक विमान में आरुढ़ हुए। वह हवाई जहाज हंस के समान आकाश की वीथियों में उडने लगा। अयोध्या पहूँचने पर, वहाँ राम का राज्याभिषेक, भरत का युवराज पट्टाभिषेक बडे धूमधाम से हुआ।

❊ ❊ ❊

पापानां वा शुभानां वा वधार्हाणां प्लवंगम!
कार्यं करुणमार्येण न कश्चिन्नापराध्यति ॥

सीतासुप्रभातम्

तव सुप्रभातमवनीतनूभवे!
स्मितफुल्लगण्डलसदाननांबुजे!
रघुनाथमानसविहारिणि! द्रुतं
शयनं समुज्झ्य परिपालयाश्रितान् ॥